RNI-UTTHIN/2013/51284

ISSN-0975-8739

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत विशेषज्ञ समिति द्वारा मूल्यांकित शोध-पत्रिका

A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

राष्ट्रबोध विशेषाङ्क

जून 2024 वर्ष 12 अंक 01

₹50/-

धर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक ISSN-0975-8739

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

धर्म–दर्शन–अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत
A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

जनवरी–जून
2024 ई.
विक्रम सम्वत् 2081

वर्ष : 12 अंक : 01

संरक्षक :
प. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी
परमाध्यक्ष : जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल
प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
डॉ० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
प्रो० हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
प्रो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
मोबाइल नं. 9411171081
ई-मेल : shivshankarmishra74@gmail.com

**

शोधपत्र परीक्षक मण्डल
प्रो० जे.के. गोदियाल (पौड़ी)
प्रो० राम बहादुर शुक्ल (जम्मू)
प्रो० रामनारायण द्विवेदी (दिल्ली)
प्रो० दिनेश कुमार गर्ग (वाराणसी)
प्रो० रामविनय सिंह (देहरादून)
डॉ० रामरतन खण्डेलवाल (हरिद्वार)

**

प्रूफ संशोधक
स्वामी नाथ

**

प्रकाशक :
श्री जयराम आश्रम
भीमगोड़ा, हरिद्वार – 249401 (उत्तराखण्ड)
फोन नं. 01334-260251
ई-मेल : jairamsandesh@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी द्वारा भार्गव प्रिंटर्स, निकट ललतारौ पुल, जनपद-हरिद्वार, उत्तराखण्ड से मुद्रित एवं श्रीजयराम आश्रम भीमगोड़ा, जनपद हरिद्वार से प्रकाशित
सम्पादक : डॉ. शिवशंकर मिश्र

अनुक्रम

आशीर्वचन
सम्पादकीय
संस्कृत साहित्य में राष्ट्रबोध .... डॉ० अनमोल शर्मा 1
श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण में राष्ट्रबोध .... डॉ० भुवनेश भारद्वाज 6
संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीयता की .... डॉ० गीता शुक्ला 10
राष्ट्र की कल्पना और जयशंकर प्रसाद ...... डॉ० कंवलजीत कौर 14
उपनिषदों में राष्ट्र कल्याण .... डॉ० अनिलानन्द 18
राष्ट्रहित में ज्योतिष शास्त्र की भूमिका .... ऋषि रंजन 22
अर्वाचीन कवि अशोक कुमार डबराल .... प्रो० कमला चौहान/मीनू रानी 26
समकालीन भारतीय साहित्य .... डॉ० रामनारायण शर्मा 30
पाणिनीय अष्टाध्यायी .... डॉ० बैकुण्ठ नाथ शुक्ल/डॉ० सन्तोष कुमार सिंह/डॉ० विक्रान्त उपाध्याय ... 36
प्राचीन भारतीय साहित्य में राष्ट्रबोध .... प्रो० संगीता मिश्रा 46
राष्ट्रबोध से आत्मबोध .... मुदित कुमार पाण्डेय 'मगन दास' 50
वाल्मीकि रामायण में राष्ट्रीय चेतना .... शोभा आर्या 52
राष्ट्रधर्म .... डॉ० कीर्तिवल्लभ शक्टा "शाकटायन:" ... 55
राष्ट्रीय भावना : वेदों के आलोक में .... डॉ० लज्जा भट्ट/भावना काण्डपाल 57
वेदों में [illegible] अध्ययन .... प्रो० महानन्द झा /ज्योति कुमारी 60
[illegible] राष्ट्रबोध .... डॉ० अंकित सिंह यादव 64
वैदि[illegible] .... प्रो० शालिमा तबस्सुम /सपना 69
राष्ट्रबोध .... पं० तनसुखराम शर्मा 72
भारत में राष्ट्रवाद का उदय .... डॉ० धनंजय शर्मा 75
योग के द्वारा राष्ट्र निर्माण .... प्रो० आशुतोष गुप्ता/अभिजित् सरकार 81
श्रीमद्भागवतमहापुराण में राष्ट्रीय चेतना .... डॉ० संजीव प्रसाद भट्ट 89
जयराम आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाप्रकल्प

पत्रिका ऑनलाईन उपलब्ध - jairamashram.org/publication jairamsandeshpatrika

❒ पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
❒ पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्याय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा।
❒ पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्श-परीक्षक मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।
❒ पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता के सम्बन्ध में सम्पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक का ही है, प्रकाशक और सम्पादक का नहीं।

वेदों में राष्ट्र का वैज्ञानिक अध्ययन मनोविज्ञान के विशेष सन्दर्भ में

प्रो० महानन्द झा
न्याय-वैशेषिक विभाग
ज्योति कुमारी (शोधछात्रा)
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

विश्व का प्राचीनतम वाङ्मय, जो अपौरुषेय है वेद कहलाता है। विद् धातु से निष्पन्न वेद शब्द के लिये सायणाचार्य कहते हैं कि अभीप्सित की प्राप्ति अनिष्ट के परित्याग का उपाय जो ग्रन्थ बताता है, वह वेद है। वेद ज्ञान के आगार हैं, ज्ञान के अन्तर्गत जितने भी विषय आते हैं वे वेद में विद्यमान हैं चाहे चेतना के स्रोत के विषय हों या सृष्टि विज्ञान के। लौकिक से लेकर अलौकिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राष्ट्र सम्बन्धित सभी विषयों का उल्लेख हमें वेद में प्राप्त हो जाता है।

भूमि, जनसमूह तथा उसकी संस्कृति का योग ही राष्ट्र कहलाता है। राष्ट्र शब्द की व्युत्पत्ति- राज् धातु से औणादिक् प्रत्यय 'ष्ट्रन्' के योग से होती है। कोशकार वाचस्पति ने अपने ग्रन्थ में राष्ट्र का अर्थ जनपद किया है जिसकी सिद्धि में सहायक मनुस्मृति में श्लोक पाया जाता है-

अशासंस्तस्करान् यस्तु बलिं गृह्णाति पार्थिवः।
तस्य प्रक्षुभ्यते राष्ट्र स्वर्गाच्च परिहीयते॥

वहीं अन्य स्थान पर पाश्चात्य विद्वान् मोनियर विलियम्स तथा प्रसिद्ध विद्वान् मनीषी आप्टे ने राष्ट्र का अर्थ-Kingdom, Realm, Empire, District, Territory, Country, Region, People, Nation तथा Subjects किया है। ध्यातव्य यह है कि Kingdom राज्य की प्रकृतियों में से एक है। राष्ट्र को एकता के सूत्र में गूँथने वाले कुछ प्रमुख तत्त्व इस प्रकार हैं-

1. जनसमूह 2. संस्कृति 3. धर्म 4. भाषा 5. राजनीति 6. अर्थ 7. भूगोलादि।

जनसमूह अर्थात् सामान्य मनुष्यों का समूह। मनुष्य किसी भी राष्ट्र निर्माण में, उसकी प्रगति में तभी सहायक हो सकते हैं जब जनसामान्य का मन स्वस्थ, नियन्त्रित तथा विचारशील हो एवं मन की इन्हीं सभी प्रकियाओं को मनोविज्ञान का विषय कहा जाता है।

मनोविज्ञान का सम्बन्ध दर्शन और विज्ञान दोनों से है। मन और मन की विविध चेष्टाएँ दर्शन का विषय हैं। अतः यह दर्शन है। मनोविज्ञान के अन्तर्गत स्नायुमण्डल, संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, ध्यान, सीखना, स्मरण, विस्मरण, कल्पना, चिन्तन, अनुभूति, संवेग, प्रेरणा, चेतना, स्वप्न, व्यक्तित्व, विफलता आदि विषय संक्षेपतः लिए जाते हैं।

वेदों में मन की प्रकृति और गुणों पर प्रकाश डाला गया है। ब्राह्मण ग्रन्थों और उपनिषदों में इस विषय पर और विस्तार से चर्चा की गई है। उपनिषदों में मन के स्वरूप, कार्यों, अनुभवों और सम्बद्धताओं का विश्लेषण किया गया है।

ब्राह्मण ग्रन्थों में मन को ब्रह्म कहा गया है। यह सर्वशक्तिमान है और परमात्मा का स्वरूप है, अतः ब्रह्म है। मन सृष्टि का कर्ता है, अतः उसे ब्रह्मा कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण में बहुत महत्त्वपूर्ण बात की गई है कि ये सभी तत्त्व मन के ही विभिन्न रूप हैं- काम (इच्छा), संकल्प (विचार), विचिकित्सा (ऊहापोह, सन्देह), श्रद्धा, अश्रद्धा, धृति (धैर्य), अधृति (अधीरता), ह्री (लज्जा) धी (ज्ञान), भी (भय, डर, आतंक) आदि। इसी प्रकार वेदों में मन के विविध गुण धर्मों का उल्लेख है। अथर्ववेद के एक मन्त्र में मनोविज्ञान के सभी विषयों का उल्लेख है-

मनसे चेतसे धिय, आकूतय उत चित्तये।
मत्यै श्रुताय चक्षसे, विधेम हविषा वयम॥[1]

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(उत्कर्षमहोत्सवविशेषाङ्कः)

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

49 वर्षे संयुक्ताङ्कः (जनवरी-दिसम्बर) 2024 ई.

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादक

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-16

26. प्राचीनभारतीयकृषिविज्ञानम् 197-201
- डॉ. रामेश्वरदयालशर्मा
27. श्रीमद्भागवतस्य प्रथमप्रकाशः चतुःश्लोकी भागवतम् 202-206
- प्रो. मिनतिरथः
28. भासकवेः वैशिष्ट्यम् 207-211
- डॉ. जे. बलिचक्रवर्ती
29. सङ्कल्पसूर्योदयस्य वैशिष्ट्यम् 212-225
- डॉ. ज्ञानरंजनपण्डा
30. अर्हन्नये कायोत्सर्गः 226-231
- डॉ. कुलदीपकुमारः
31. अभिभावककिशोरसङ्घर्षस्य शास्त्रीयं समाधानम् 232-236
- श्रीमती ज्योत्सनाकुमारी वर्मा
- प्रो. कुलदीपशर्मा
32. दार्शनिकप्रस्थाने आत्मतत्वम् 237-240
- प्रो. महानंद झा
33. शिक्षणाधिगमे प्रत्ययविमर्शः 241-249
- डॉ. सुरेन्द्रमहतो
- डॉ. परमेशकुमारशर्मा
34. वेदेषु शब्दप्रयोगविशेषाः 250-253
- आचार्यः के. गणपतिभट्टः
35. भारतीयज्ञानपरम्परायां योगस्वरूपम् 254-261
- डॉ. दिनेशकुमारयादवः
36. नयचन्द्रसूरिविरचिते हम्मीरमहाकाव्ये रसध्वनिः 262-278
- डॉ. ललितकिशोरशर्मा
37. विहगेन्द्रसंहितायां सुदर्शनस्य समाराधनविधानम् 279-284
- डॉ. पी.टी.जी. रंगा रामानुजाचार्युलु

शोधप्रभा (उत्कर्षमहोत्सवविशेषाङ्कः)
वर्ष : 49, संयुक्ताङ्कः

दार्शनिकप्रस्थाने आत्मतत्वम्

- प्रो. महानंद झा*

प्राणात्मवादी चार्वाकस्य इदं मतं यत् प्राणः जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थायां विद्यमानो भवति। यस्य सत्वे शरीरं जीवति यस्याभावे च शरीरं मृतत्त्वेन व्यवह्रियते अतः प्राण एव आत्मा। इदं लक्षणं जीवात्मन्यपि संगच्छते। तथा च जीवोपेतं वाच किलेदं म्रियते, न जीवो म्रियते"[1] इति श्रुत्यामपि प्राणरूप जीवात्मनः परित्यक्ते मरणव्यवहारः कृतः। "प्रियोऽन्यस्मात् सर्वस्मादन्तरन्तरं यदयमात्मा"[2] श्रुत्यामस्यां पुत्रादिभिः श्रेष्ठः प्रियतमः सः आत्मा इति व्यवहृतः। एतादृशं प्रियतमत्वं प्राणे एव दृश्यते। अथवा "अन्योऽन्तरात्मा प्राणमयः"[3] अत्र प्राण शब्दः आत्मबोधकः। "मातेव पुत्रं रक्षस्व"[4] अनया श्रुत्या यथा माता पुत्रं रक्षति तथा इन्द्रियाणां रक्षकः प्राणः इति संकेतितः। अतः प्राण एवात्मा इति चार्वाकमतम्।

नैयायिकः उक्तमतमनुमानेन खण्डयति। तथाहि प्राणः अनात्मा वायुत्वात् बाह्यवायुवत। व्याकरणशास्त्रदृष्ट्या "जीवप्राणधारणे" धातोरच्[5] प्रत्यये जीव शब्दस्य निष्पत्तिः। एतावता जीवशब्दस्य अर्थः भवति प्राणधारकः। अतः आत्मप्राणयोः आधाराधेयभावः सम्भवति। चार्वाकसिद्धान्तात् तु आधाराधेयभाव एव अनयोरनुपपन्नं स्यात्। अतः प्राणः आधेयत्वात् भिन्नः आत्मा च आधारत्वात् भिन्नः। "अस्माकं श्वासः प्रचलति" इति अनुभवसिद्धः। अत्र श्वासात्मकप्राणात् भिन्नः आत्मा। चार्वाकरीत्या तु प्राणवायोः प्रत्यक्षत्वात् घटवत् स्पर्शवान्, सावयवः, उत्पत्तिविनाशशील प्राणरूपात्मनः अनित्यत्वापत्तिः। अपि च अस्य शरीरस्य जीवनं न केवलं प्राणाधीनमपितु प्राणधारकस्य जीवात्मनोरधीनमस्ति। एतद् वाक्यं समर्थयति श्रुतिः-

न प्राणेन नापाऽनेन मर्त्यो कश्चन ।
इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेतावुभाश्रितौ ॥[6]

---

* आचार्य, न्यायविभाग, श्रीला.ब.शा.रा.संस्कृत विश्वविद्यालयः, नवदेहली-110016

1. माधवीयधातुवृत्तिः-602
2. तैत्तिरीयोपनिषद्।
3. तै.-2.21
4. तत्रैव।
5. पा.सू.-3.1.1341
6. वेदान्तपरिभाषायाम्।